INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान पटवार

राजस्थान अधीनस्थ और मंत्रिस्तरीय सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB)

भाग – 3

इतिहास (भारत + राजस्थान)

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"राजस्थान पटवारी नोट्स"** को एक विभिन्न अपने - अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालयिक सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान पटवारी भर्ती परीक्षा** में पूर्ण संभव मदद करेंगे ।

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स मे कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूची पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/0yupe6

Online Order करें - https://shorturl.at/pwFNP

मूल्य : (₹)

संस्करण : नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	भारत का इतिहास	
1.	भारत के सांस्कृतिक आधार	1
2.	वैदिक काल	6
3.	छठी शताब्दी ई. पू. की श्रमण परम्परा	10
4.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ	16
5.	प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु	41
	मध्यकालीन भारत	
1.	अरबों का सिन्ध पर आक्रमण	55
2.	सल्तनतकाल	58
3.	मुगलकालीन भारत	71
4.	मध्य काल में कला एवं वास्तु	75
5.	भक्ति एवं सूफी आंदोलन	80
	आधुनिक भारत का इतिहास	
1.	आधुनिक भारत का विकास	85
2.	राष्ट्रवाद का उदय	105
3.	स्वतंत्रता संघर्ष एवं राष्ट्रीय आंदोलन	127
4.	स्वतंत्रता के आस-पास का भारत एवं राष्ट्र निर्माण	174
	राजस्थान का इतिहास	
1.	राजस्थान इतिहास के स्रोत	179
2.	प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)	197
3.	ऐतिहासिक राजस्थान	207

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"राजस्थान पटवारी नोट्स"** को एक विभिन्न अपने - अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालयिक सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान पटवारी भर्ती परीक्षा – 2024** में पूर्ण संभव मदद करेंगे ।

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स मे कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूची पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें – https://wa.link/0yupe6

Online Order करें - https://shorturl.at/pwFNP

मूल्य : (₹)

संस्करण : नवीनतम (2024)

4.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासक	212
5.	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था	268
6.	आधुनिक राजस्थान	283
7.	राजस्थान में राजनैतिक जागरण	298
8.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	302
9.	विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन	312
10.	राजस्थान का एकीकरण	324

भारत का इतिहास

अध्याय – 1

भारत के सांस्कृतिक आधार

सिन्धु घाटी सभ्यता

इतिहास का अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

- वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्त्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है।
- **मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल** से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

- आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्त्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिन्धु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं।
- इस काल की लिपि को **सर्पिलाकार लिपि** कहते हैं क्योंकि सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी ।
- इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की हैं ।
- **राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा** की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्त्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे **वैदिक काल** जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में **हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी** द्वारा की गई थी।

इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है-

- सैंधव सभ्यता - जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया ।
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया
- प्रथम नगरीय क्रान्ति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया
- सरस्वती सभ्यता के द्वारा कहा गया।
- मेलूहा सभ्यता के द्वारा कहा गया ।
- कांस्ययुगीन सभ्यता के द्वारा कहा गया।

- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक **फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे** है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं ।
- 1902 में लार्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में **राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों** की खोज की।

- **सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ -**
  - प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
  - भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक है ।
  - मंगोलियन - मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है ।

- **सिन्धु सभ्यता की तिथि**

कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.
ह्विलेर - 2500-1700 ई.पू.
मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

सभ्यता का विनाश

- नदी में बाढ़ के कारण → मार्शल, मैके, एस.आर.राव
- बाह्य आक्रमण → गार्डन चाइल्ड, व्हीलर, पिगट
- जलवायु परिवर्तन → आरेल स्टाइन, अमला नन्द घोष
- प्राकृतिक आपदा → केन्यू. आर. कनेडी

इस सभ्यता का विस्तार →

इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान, दक्षिणी अफगानिस्तान तथा भारत के राजस्थान, गुजरात, जम्मू कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं महाराष्ट्र तक था।

अफगानिस्तान में सिंधु सभ्यता के स्थल

- शोर्तुघई और मुंडिगक अफगानिस्तान में सिंधु घाटी सभ्यता के एकमात्र स्थल हैं।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट

- **सुत्कांगेडोर**- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है । इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।
- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते है।

मोहनजोदड़ों	हड़प्पा
चन्हूदड़ों	डेराइस्माइल खाँ
कोटदीजी	रहमान टेरी
आमरी	गुमला
अलीमुराद	जलीलपुर

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

- **हरियाणा- राखीगढ़ी,** सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू
- **पंजाब** – कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर माजरा
- रोपड़ (रूपनगर) - स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा
  चिनाब नदी के किनारे
  सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान - कालीबंगा, बालाथल**
  तरखान वाला डेरा
- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर
  सभ्यता का पूर्वी स्थल
  - माण्डी
  - बड़गाँव
  - हलास
  - **सनौली**
- **गुजरात**
  धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, **लोथल,** रोजदिख्वी तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगन्नार
- **महाराष्ट्र**- दैमाबाद
  सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
  फैलाव- त्रिभुजाकार

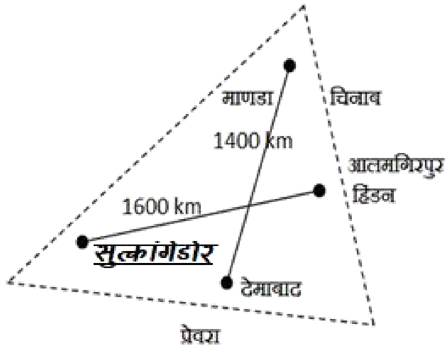

स्थल	**नदियों के नाम**	**उत्खन्न का वर्ष**	**उत्खननकर्ता**	**वर्तमान स्थिति**
हड़प्पा	रावी	1921	दयाराम साहनी और माधवस्वरूप वत्स	पश्चिमी पंजाब का साहिवाल जिला (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ो	सिन्धु	1922	राखलदास बनर्जी	सिन्ध प्रांत का लरकाना जिला (पाकिस्तान)
कालीबंगा	घग्घर	1961	बी. बी. लाल और बी. के. थापर	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला (भारत)
कोटदीजी	सिन्धु	1955	फजल अहमद	सिन्ध प्रांत का खैरपुर (पाकिस्तान)
रंगपुर	भादर	1953-54	रंगनाथ राव	गुजरात का काठियावाड़ क्षेत्र (भारत)
रोपड़	सतलज	1953-56	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब का रोपड़ ज़िला (भारत)

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

लोथल	भोगवा	1955 तथा 1962	रंगनाथ राव	गुजरात का अहमदाबाद ज़िला (भारत)
आलमगीरपुर	हिंडन	1958	यज्ञदत्त शर्मा	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला- (भारत)
बनावली	रंगोई	1974	रविन्द्र नाथ : विष्ट	हरियाणा का फतेहाबाद जिला (भारत)
धौलावीरा	मनहार एवं मदसार	1990-91	रविन्द नाथ विष्ट	गुजरात का कच्छ जिला (भारत)

- अभी तक सिन्धु सभ्यता के 2800 से अधिक स्थलों की खोज हो चुकी है।

सिन्धु सभ्यता के 7 नगर

- हड़प्पा
- बनावली
- मोहनजोदड़ों
- धौलावीरा
- चन्हूदड़ों
- लोथल
- कालीबंगा

प्रमुख स्थल एवं विशेषताएँ

- **हड़प्पा**

  रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज **दयाराम साहनी** ने की थी ।

  खोज- वर्ष **1921** में

  उत्खनन-

i. 1921-24 व 1924-25 में साहनी द्वारा ।

ii. 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरुप वत्स द्वारा

iii. 1996 में मार्टीयर ह्वीलर द्वारा

- हड़प्पा 5 किमी. की परिधि में फैला हुआ था जो प्रशासनिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- **पिगट ने** हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की **जुड़वा राजधानी** कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है ।
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम ह्वीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है ।
- हड़प्पा से प्राप्त **कब्रिस्तान को R-37** नाम दिया ।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया ।
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों में पूर्व व पश्चिम में दो टीले मिलते हैं ।

  पूर्वी टीले पर नगर पश्चिमी टीले पर-दुर्ग
- हड़प्पा के अवशेषों में **दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवासगृह चबूतरा, अन्नागार तथा तांबे की मानव आकृति** महत्त्वपूर्ण है।

प्रश्न- हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा जोड़ा सही नहीं हैं?

A. जे. एच. मैंके - सुमेर से लोगों का पलायन

B. मार्टीमर व्हीलर - पश्चिमी एशिया से सभ्यता के विचार का प्रवसन

C. अमलानंद घोष - हड़प्पा सभ्यता का उद्भव पूर्व हड़प्पा की सभ्यता परिपक्वता से हुआ

D.एम. आर. रफीक. मुगल - हड़प्पा सभ्यताने मेसोपोटामिया सभ्यता से प्रेरणा ली।

उत्तर – D

मोहनजोदड़ों

➢ **सिन्धु नदी** के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में **राखलदास बनर्जी** ने की थी। उत्खनन

- राखलदास बनर्जी (1922-27)
- मार्शल
- जे.एच. मैंके
- जे.एफ. डेल्स

- हड़प्पा सभ्यता का प्रसिद्ध पुरास्थल मोहनजोदड़ों देखने में आध्यात्मिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- मोहनजोदड़ों का नगर **कच्ची ईंटों** के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला
- मोहनजोदड़ों को **स्तूपों का शहर** भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले **चाँदी के दो सिक्के** मिले हैं ।
- **वस्त्र निर्माण** का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण – मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है । (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक **20 खम्भों वाला सभाभवन** मिला है। मैंके ने इसे 'बाजार' कहा है।

अध्याय – 4

प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ

- **मौर्य वंश**

  राजनीतिक इतिहास
- शासन काल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक (321-185 ई.पू.)
- स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से (मगध में)
- मौर्य शासन से पहले मगध पर नंद वंश के शासक धनानन्द का शासन था।
- मौर्य राजवंश ने लगभग 137 वर्ष तक भारत में राज किया।
- राजधानी पाटलिपुत्र (पटना)

आचार्य चाणक्य

- जन्म तक्षशिला में (आचार्य)
- अन्य नाम विष्णुगुप्त, कौटिल्य
- चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित आचार्य चाणक्य थे।
- **पुराणों में चाणक्य को "द्विजर्षभ" कहा गया है जिसका मतलब है श्रेष्ठ ब्राह्मण**
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद भी बिन्दुसार के समय भी चाणक्य प्रधानमंत्री बना रहा (कुछ समय के लिए)
- चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य रहे थे।
- इन्होंने **अर्थशास्त्र नामक पुस्तक** की रचना की।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर प्रकाश डालता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण हैं।

चन्द्रगुप्त मौर्य (321 – 298 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य 321 ई.पू. धनानन्द को हरा कर मगध का शासक बना।
- इसने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को भी हराया था।
- सेल्यूकस की पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ हुआ।
- **उपाधियाँ** - पाटलिपुत्रक (पालिब्रोथस)
- भारत का मुक्तिदाता
- प्रथम भारतीय साम्राज्य का संस्थापक

प्रमुख तथ्य : चन्द्रगुप्त मौर्य

- बैक्ट्रिया के शासक सेल्यूकस को चन्द्रगुप्त ने पराजित कर उसकी पुत्री से विवाह किया तथा **दहेज में हेरात, कंधार, मकरान तथा काबुल प्राप्त किया।**
- सेल्यूकस ने अपने राजदूत मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा था। यूनानी लेखकों ने **पाटलिपुत्र को पालिब्रोथा के नाम से संबोधित** किया है।
- **'चन्द्रगुप्त' नाम का प्राचीनतम उल्लेख रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख** में प्राप्त हुआ है।
- जीवन के अंतिम दिनों में चन्द्रगुप्त ने **श्रवणबेलगोला में जैन विधि से उपवास पद्धति** (संलेखना पद्धति) **द्वारा प्राण त्याग दिये।**
- **चन्द्रगुप्त के समय में भूमि पर राज्य तथा कृषक दोनों का अधिकार था।**
- आय का प्रमुख स्त्रोत भूमिकर (भाग) था। संभवतः कर (Tax) उपज का 1/6 होता था।
- **मुद्रा - पंचमार्क या आहत सिक्के।**
- इसी के काल से सर्वप्रथम कला के क्षेत्र में पाषाण का प्रयोग किया गया।
- चन्द्रगुप्त जैन धर्म का अनुयायी था।

मेगस्थनीज

- मेगस्थनीज सेल्यूकस 'निकेटर' का राजदूत था।
- **इसने 'इंडिका' नामक पुस्तक की रचना की जिससे मौर्यकालीन शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।**
- मेगस्थनीज भारत आने वाला प्रथम राजदूत था।
- यूनानियों ने चन्द्रगुप्त को **सैंड्रोकोट्स** नाम दिया।
- चन्द्रगुप्त के संरक्षण में प्रथम जैन संगीति पाटलिपुत्र में हुई थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना शासन अपने पुत्र बिन्दुसार को सौंप दिया था।

बिन्दुसार (298-273 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर बैठा।
- बिन्दुसार के काल में भी चाणक्य प्रधानमंत्री था।
- बिन्दुसार आजीवक संप्रदाय का अनुयायी था।
- बिन्दुसार ने एंटियोकस से मदिरा, सूखा अंजीर तथा एक दार्शनिक भेजने की मांग की थी, परन्तु एंटियोकस ने मदिरा तथा सूखे अंजीर तो भेजे लेकिन दार्शनिक नहीं भेजे।
- **अमित्रघात** अर्थात् 'शत्रुओं का वध करने वाला' बिन्दुसार की उपाधि थी। उसका अन्य नाम भद्रसार तथा सिंहसेन भी था।

अशोक महान

- अशोक अपने **पिता बिन्दुसार** के शासन काल में प्रान्तीय प्रशासक (उज्जयनी) के पद पर था।
- प्राचीन भारतीय इतिहास का सर्वाधिक प्रसिद्ध सम्राट अशोक था।
- सर्वाधिक अभिलेखीय प्रमाण इसी के काल के मिलते हैं।
- **अभिलेखों में अशोक का नाम देवानाम प्रियदर्शी लिखा मिलता है।**

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

गुप्त वंश की गुफा मूर्तियाँ

- गुप्त काल को रॉक कट गुफाओं के लिए भी जाना जाता था। एलोरा की गुफाओं की मूर्तियाँ, एलिफेंटा की गुफाओं की मूर्तियाँ और अजन्ता की गुफाएं देखने लायक हैं।
- **पूर्ण रूप से आरंभिक गुप्त शैली में गुप्तकालीन मूर्तियों के सबसे पुराने नमूने मध्य प्रदेश राज्य के विदिशा और उदयगिरि गुफाओं के हैं**, जो पास में मौजूद हैं। इसका निर्माण 5 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मथुरा परंपरा में किया गया था।

गुप्त वंश की मंदिर मूर्तियाँ

- गुप्त शासकों की अवधि सार्वभौमिक उपलब्धि की आयु थी, एक शास्त्रीय युग, जैसा कि गोएत्ज़ के शब्दों में `जीवन का एक आदर्श, नायाब शैली' है।
- **गुप्त शासन की अवधि के दौरान धार्मिक वास्तुकला काफी लोकप्रिय थी।** इसलिए भारत में बौद्ध और जैन मंदिरों को पूरे साम्राज्य में खड़ा किया गया और महायान पंथों की अधिक जटिल छवियां अस्तित्व में आईं।
- मंदिरों में मूर्तिक तत्व थे जैसे कि **`नागा'** और **`यक्ष'** को दो महान आस्तिक पंथों के देवताओं के रूप में स्वतंत्र पंथ छवियों के रूप में प्रतिस्थापित किया गया था। दशावतार मंदिर (देवगढ़) की मूर्ति, मध्य प्रदेश राज्य के जबलपुर में भीतरगाँव मंदिर की मूर्ति, वैष्णवती तिगावा मंदिर और अन्य भी गुप्तकालीन मूर्तियों के कुछ उदाहरण हैं।
- गुप्त काल के दौरान अन्य स्थापत्य चमत्कारों में पार्वती मंदिर (नचना) की मूर्ति, शिव मंदिर की मूर्ति (भुमरा) और विष्णु मंदिर (तिगावा) की मूर्ति शामिल हैं।
- इस तरह की मूर्तियों ने मथुरा और गांधार जैसे प्रतिष्ठित कला शैलियों के प्रभाव को अपनी शैली में प्रदर्शित किया। **गुप्त युग के दौरान सारनाथ के `स्थायी बुद्ध' और उत्तर प्रदेश में मथुरा के `बैठे बुद्ध' भी मूर्तिकला के अद्भुत नमूने हैं।**

गुप्त काल में साहित्य

गुप्तकाल में ही अधिकांश पुराणों का संकलन हुआ। प्रारम्भ में **पुराण रचना से चारण लोग जुड़े हुए थे।** उन चारणों में लोमहर्ष और उसके पुत्र उग्रसर्व प्रमुख हैं। अधिकांश पुराणों से वे जुड़े हुए थे, किन्तु **आगे चलकर पुराण रचना का कार्य ब्राह्मणों के हाथों में चला गया।**

गुप्त काल में संस्कृत भाषा और साहित्य का अप्रतिम विकास हुआ। **संस्कृत का प्रयोग शिलालेख, स्तम्भलेख, दान-पत्र लेख आदि में हुआ।** इसी भाषा में इस युग के महान कवियों और साहित्यकारों ने अपनी अनेक कालजयी रचनाओं का प्रणयन किया।

प्रशस्तियाँ-

- गुप्त सम्राटों की उपलब्धियाँ शिलाओं, स्तम्भों तथा सिक्कों से विदित होती हैं। **हरिषेण ने प्रयाग प्रशस्ति की रचना की।**
- **इसमें समुद्रगुप्त की उपलब्धियों का वर्णन है। हरिषेण की शैली आलंकारिक थी।** उसने गद्य-पद्य दोनों को अपनाया है। इस अभिलेख की कई पंक्तियाँ खंडित हो चुकी हैं।
- **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का परराष्ट्र मंत्री वीरसेन भी कवि था। इसने उदयगिरी के शैवलेख की रचना की थी।** गिरनार पर्वत और भीतरी स्तंभ पर स्कंदगुप्त की विजय और उपलब्धियाँ अंकित हैं।
- **मंदसौर का सूर्य मंदिर अभिलेख कुमारगुप्त द्वितीय के शासनकाल का है। इसकी रचना वत्सभट्टि ने की थी।**
- अभिलेख के प्रारंभिक भाग में लाट प्रदेश (दक्षिणी गुजरात) की प्राकृतिक छटा का निरूपण है। इसमें मालवा के दशपुर नगर का भी सजीव चित्रण मिलता है। वत्सभट्टि द्वारा इस नगर में निवास करने वाली पट्टवाय श्रेणी (बुनकर समिति) के आदेश के कारण इस प्रशस्ति का निर्माण किया गया।
- वासुल ने मंदसौर नरेश यशोवर्मन की उपलब्धियों का वर्णन मन्दसौर के स्तम्भ लेख में किया है। इस प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यशोवर्मन जो प्रारम्भ में गुप्तों का सामन्त था, ने अपनी शक्ति में अभिवृद्धि कर ली थी और स्वतंत्र शासक बन गया था।
- काव्यमय शैली सिर्फ अभिलेखों में ही दिखाई नहीं देती वरन् सिक्कों पर भी देखी जाती है।

काव्यग्रन्थ और नाटक-

- संस्कृत साहित्य में ही नहीं, अपितु समस्त भारतीय साहित्य में कालिदास का सर्वाधिक महत्त्व है। कालिदास के स्थान, काल एवं वंश की जानकारी नहीं मिलती लेकिन उसकी रचनाओं को विद्वानों ने भास के बाद की रचना माना है।
- कालिदास एक कवि और नाटककार दोनों दृष्टियों से सफल और बेजोड़ हैं। **कालिदास के चार काव्य (ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसंभव एवं रघुवंश) तथा तीन नाटक (मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञानशकुन्तलम्)** अब तक प्राप्त हुए हैं।
- ऋतुसंहार उनकी प्रथम रचना लगती है जिसे उन्होंने यौवनावस्था में लिखा होगा। कुछ विद्वान् **ऋतुसंहार को अत्यन्त सामान्य और नैतिक गुणों से रहित रचना मानते हैं।**
- पाश्चात्य साहित्यकार जैसे वर्जिल, गेटे, टेनिसन की रचनाओं में यह बात देखी जाती है। इससे छः ऋतुओं का वर्णन मिलता है और कवि ने इसके द्वारा प्रकृति का श्रृंगारिक, सहज एवं स्वाभाविक वर्णन किया है। सम्पूर्ण काल में युवक-युवतियों के प्रेम के साथ, ऋतुओं के परिवर्तन के सम्बन्धों को दर्शाया गया है।

मेघदूत-

- एक गीतिकाव्य है, जो अपनी कोटि की सर्वोत्तम रचना मानी जाती है। यह कालिदास की काव्य कला का सुन्दर उदाहरण है, **जिसमें प्रकृति के सौंदर्य का भी चित्रण किया गया है।**
- हिमालय की सुन्दर छटा व बसन्त ऋतु का वर्णन मिलता है। ऋतुसंहार की तुलना में मेघदूत निसन्देह प्रौढ़कालीन

अध्याय – 3

मुगलकालीन भारत

मुग़ल काल (1526-1707)

राजनीतिक चुनौतियाँ एवं सुलह -अफगान

- पानीपत के मैदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चुगताई तुर्क जलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया, जिसमें लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदोश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तारूढ़ तुर्क अफगानी सुल्तानों की - दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलटकर रख दिया और मुग़ल साम्राज्य और मुग़ल सल्तनत की नींव रखी। **गुप्त वंश के पश्चात् मध्य भारत में केवल मुग़ल साम्राज्य ही ऐसा साम्राज्य था, जिसका एकाधिकार हुआ था।**
- **मुग़ल वंश का संस्थापक बाबर था,** अधिकतर मुग़ल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे, **मुग़ल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ।**

बाबर का शासन काल (1526 – 1530 ई.)

- **बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना में 1483 ई. में हुआ था। जो फ़िलहाल उज्बेकिस्तान का हिस्सा है।**
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। **बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था।**
- **पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।**
- **खनवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई. में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।**
- **चंदेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई. में मेदिनी राय और बाबर के बीच हुआ,** जिसमें बाबर की जीत हुई।
- **घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई. में अफगानों और बाबर के बीच हुआ,** जिसमें बाबर की जीत हुई।

  नोट :- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुगलमा / तुलगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया।
- **उसकी विजय का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था। भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था।**
- **पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उज्बेकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने के लिए 'उस्मानी विधि जिसे 'रूमी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।**
- बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात् उनके शासकों 'को (दिल्ली शासकों) सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर **अपने आप को 'बादशाह' कहलवाना शुरू किया।**
- **पानीपत के युद्ध के बाद बाबर का दूसरा महत्वपूर्ण युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध 17 मार्च, 1527 ई. में आगरा से 40 किमी दूर खानवा नामक स्थान पर हुआ था। जिसमें विजय प्राप्त करने के पश्चात् बाबर ने गाज़ी की उपाधि धारण** की थी । इस युद्ध के लिए **अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिये बाबर ने 'जिहाद' का नारा दिया था ।**
- साथ ही **मुसलमानों पर लगने वाले कर तमगा की समाप्ति की घोषणा की थी,** यह एक प्रकार का व्यापारिक कर था। राजपूतों के विरुद्ध इस 'खानवा के युद्ध का प्रमुख कारण बाबर द्वारा भारत में ही रुकने का निश्चय था।
- 29 जनवरी, 1528 को बाबर ने चंदेरी के शासक मेदिनी राय पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था। यह विजय बाबर को मालवा जीतने में सहायक रही थी।
- इसके बाद बाबर ने 06 मई, 1529 में 'घाघरा का युद्ध लड़ा था। जिसमें बाबर ने बंगाल और बिहार की संयुक्त अफगान सेना को हराया था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' का निर्माण किया था, जिसे तुर्की में 'तुजुक-ए- बाबरी' कहा जाता है। जिसे बाबर ने अपनी मातृभाषा चगताई तुर्की में लिखा है।
- इसमें बाबर ने तत्कालीन भारतीय दशा का विवरण दिया है, जिसका फारसी अनुवाद अब्दुर्रहीम खानखाना ने किया है और अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती बेबरिज द्वारा किया गया है।
- **बाबर ने अपनी आत्मकथा में 'बाबरनामा कृष्णदेव राय तत्कालीन विजयनगर के शासक को समकालीन भारत का शक्तिशाली राजा कहा है।** साथ ही पांच मुस्लिम और दो हिन्दू राजाओं मेवाड़ और विजयनगर का ही जिक्र किया है।
- बाबर ने 'रिसाल-ए-उसज' की रचना की थी, जिसे 'खत-ए बाबरी ' भी कहा जाता है। बाबर ने एक तुर्की काव्य संग्रह 'दिवान का संकलन भी करवाया था। बाबर ने 'मुबइयान' नामक पद्य शैली का विकास भी किया था।
- बाबर ने संभल और पानीपत में मस्जिद का निर्माण भी करवाया था। **साथ ही बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में मंदिरों के बीच 1528 से 1529 के मध्य एक बड़ी मस्जिद का निर्माण करवाया था, जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना गया।**
- बाबर ने आगरा में एक बाग का निर्माण करवाया था, जिसे 'नर-ए-अफगान' कहा जाता था, जिसे वर्तमान में **'आरामबाग'** के नाम से जाना जाता है। इसमें **चारबाग शैली का प्रयोग किया गया है।**
- यहीं पर 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु के बाद उसको दफनाया गया था। परन्तु कुछ समय बाद बाबर के

शव को उसके द्वारा ही चुने गए स्थान काबुल में दफनाया गया था।

हुमायूँ (1530 ई. - 1556 ई.)

- बाबर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र हुमायूँ मुग़ल वंश के शासन पर बैठा ।
- हुमायूँ ने अपने साम्राज्य का विभाजन भाइयों में किया था। उसने कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल तथा हिंदाल को अलवर प्रदान किया था।
- **हुमायूँ का सबसे बड़ा प्रतिद्वंदी अफगान नेता शेर खां था, जिसे शेरशाह शूरी भी कहा जाता है।**
- हुमायूँ का अफगानों से **पहला मुकाबला 1532 ई. में दौहरिया 'नामक स्थान पर** हुआ। इसमें **अफगानों का नेतृत्व महमूद लोदी ने किया था। इस संघर्ष में हुमायूँ सफल रहा।**
- 1532 ई. में हुमायूँ ने दिल्ली में दीन पनाह' नामक नगर की स्थापना की।
- 1535 ई. में ही उसने बहादुर शाह को हराकर गुजरात और मालवा पर विजय प्राप्त की।
- शेर खां की बढ़ती शक्ति को दबाने के लिए हुमायूँ ने 1538 ई. में चुनारगढ़ के किले पर दूसरा घेरा डालकर उसे अपने अधीन कर लिया।
- 1538 ई. में हुमायूँ ने बंगाल को जीतकर मुगल शासक के अधीन कर लिया। बंगाल विजय से लौटते समय 26 जून, 1539 को चौसा के युद्ध में शेर खां ने हुमायूँ को बुरी तरह पराजित किया।
- शेर खां ने 17 मई, 1540 को बिलग्राम के युद्ध में पुनः हुमायूँ को पराजित कर दिल्ली पर बैठा। हुमायूँ को मजबूर होकर भारत से बाहर भागना पड़ा।
- 1545 ई. में हुमायूँ ने कामरान से काबुल और गंधार छीन लिया।
- 15 मई, 1555 को मच्छीवाड़ा तथा 22 जून, 1555 को सरहिन्द के युद्ध में सिकन्दर शाह सूरी को पराजित कर हुमायूँ ने दिल्ली पर पुनः अधिकार लिया।
- 23 जुलाई, 1555 को हुमायूँ एक बार फिर दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ, परन्तु अगले ही वर्ष 27 जनवरी, 1556 ई. को पुस्तकालय की सिढ़ियों से गिर जाने से उसकी मृत्यु हो गयी।
- **लेनपूल ने हुमायूँ पर टिप्पणी करते हुए कहा, "हुमायूँ जीवन भर लड़खड़ाता रहा और लड़खड़ाते हुए उसने अपनी जान दे दी।"**
- बैरम खां हुमायूँ का योग्य एवं वफादार सेनापति था, जिसने निर्वासन तथा पुनः राज सिंहासन प्राप्त करने में हुमायूँ की मदद की।

शेरशाह सूरी (1540 ई. - 1545 ई.)

- **बिलग्राम के युद्ध में हुमायूँ को पराजित कर 1540 ई. में 67 वर्ष की आयु में दिल्ली की गद्दी पर बैठा।** इसने मुग़ल साम्राज्य की नींव उखाड़ कर भारत में अफगानों का शासन स्थापित किया।
- इसके बचपन का नाम फरीद था। शेरशाह का पिता हसन खां जौनपुर का एक छोटा जागीरदार था।
- **1539 ई. में बंगाल के शासक नुसरत शाह को पराजित करने के बाद शेर खां ने 'हजरत-ए-आला' की उपाधि धारण की ।**
- 1539 ई. में चौसा के युद्ध में हुमायूँ को पराजित करने के बाद शेर खां ने 'शेरशाह' की उपाधि धारण की ।
- 1540 में दिल्ली की गद्दी पर बैठने के बाद शेरशाह ने सूरवंश अथवा द्वितीय अफगान साम्राज्य की स्थापना की।
- शेरशाह ने अपनी उत्तरी पश्चिमी सीमा की सुरक्षा के लिए 'रोहतासगढ़' नामक एक सुदृढ़ **किला बनवाया।**
- **1544 ई. में शेरशाह ने मारवाड़ के शासक मालदेव पर आक्रमण किया ।** इसमें उसे बड़ी मुश्किल से सफलता मिली। **इस युद्ध में राजपूत सरदार' जैता 'और' कुप्पा' ने अफगान सेना के छक्के छुड़ा दिए।**
- 1545 ई. में शेरशाह ने कालिंजर के मजबूत किले का घेरा डाला, जो उस समय कीरत सिंह के अधिकार में था, परन्तु 22 मई 1545 को बारूद के ढ़ेर में विस्फोट के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।
- प्रसिद्ध ग्रैंड ट्रंक रोड (पेशावर से कलकत्ता) की मरम्मत, करवाकर व्यापार और आवागमन को सुगम बनाया।
- शेरशाह का मकबरा बिहार के सासाराम में स्थित है, जो मध्यकालीन कला का एक उत्कृष्ट नमूना है।
- शेरशाह की मृत्यु के बाद भी सूर वंश का शासन 1555 ई. में हुमायूँ द्वारा पुनः दिल्ली की गद्दी प्राप्त करने तक कायम रहा ।

अकबर (1556 – 1605 ई.)

- हुमायूँ की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अकबर का कलानौर नामक स्थान पर 14 फरवरी, 1556 को मात्र 13 वर्ष की आयु में राज्याभिषेक हुआ।
- अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 को अमरकोट के राजा वीरमाल के प्रसिद्ध महल में हुआ था।
- **अकबर ने बचपन से ही गजनी और लाहौर के सूबेदार के रूप में कार्य किया था ।**
- भारत का शासक बनने के बाद 1556 से 1560 तक अकबर बैरम खां के संरक्षण में रहा।
- **अकबर ने बैरम खां को अपना वजीर नियुक्त कर खान-ए-खाना की उपाधि प्रदान की थी।**
- 5 नवम्बर, 1556 को पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर की सेना का मुकाबला अफगान शासक मुहम्मद आदिल शाह

धौलपुर – तमंचाशाही
अलवर –अखैशाही, रावशाही
सलूम्बर- पद्मशाही
करौली- माणकशाही
कोटा – मदनशाही,गुमानशाही

ताम्रपत्र

आहड़ (1206) – गुजरात
खेरादा (1437)- राणा कुंभा द्वारा दान
चिकली (1483)- किसानों से ली जाने वाली लगान
पुर (1535) – कर्मावती द्वारा जौहर पूर्व दान
मुण्डीयार री ख्यात का विषय मारवाड़ के चौहान है

अध्याय – 2

प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

I. बागौर (भीलवाड़ा)

किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है ।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण- Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषाणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे। ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।

- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं ।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी ।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली हैं, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृद्भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान: बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)
- **मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण** में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।
- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

<u>कांस्ययुगीन सभ्यताएं</u> -

2. <u>कालीबंगा की सभ्यता -</u>

कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है – **सरस्वती नदी** । इसे

दृषनदी, मृतनदी, नटनदी के नाम से भी जानते हैं।

यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

<u>इस सभ्यता की खोज</u> -

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **<u>अमलानंद घोष</u>** है। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

<u>बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)</u>
बीके (बालकृष्ण) थापर

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

<u>एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में</u> –

- ये इटली के के निवासी थे । इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए । जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये । बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है ।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी ।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे-

1. पूर्वी राजस्थानी 2.पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है – **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल

किशनगढ़ का राठौड़ वंश

किशनगढ़ में राठौड़ वंश की स्थापना जोधपुर शासक मोटराजा उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह ने 1609 ई. में की। इन्होंने सेठोलाव के शासक राव दूदा को पराजित कर यहाँ अपनी स्वतंत्र जागीर की स्थापना की।

मुगल शासक जहाँगीर ने इन्हें महाराजा की उपाधि प्रदान की।

- 1612 ई. में **किशनसिंह** ने **किशनगढ़ नगर** बसाकर उसे अपनी राजधानी बनाया।
- **किशनसिंह** की हत्या **जोधपुर महाराजा सूरसिंह** के पुत्र **गजसिंह** ने की।
- **किशनसिंह** की **छतरी अजमेर** में **घूघरा घाटी** में स्थित है।

किशनसिंह के बाद **सहलमल** तथा इनके बाद **जगमाल सिंह किशनगढ़ के** शासक बने।

महाराजा स्वरुप सिंह

- स्वरूपसिंह ने रूपनगढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया। इन्होंने बदख्शां में पठानों द्वारा किए गए विद्रोह को दबाया।
- स्वरूपसिंह सामूगढ़ के युद्ध (1658 ई.) में औरंगजेब के विरुद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

महाराजा मानसिंह

- महाराजा स्वरूप सिंह के बाद मानसिंह किशनगढ़ के शासक बने।
- इनकी बहन चारुमति का विवाह मुगल शासक औरंगजेब से तय हुआ था लेकिन मेवाड़ महाराणा राजसिंह ने चारुमति से विवाह कर लिया।

महाराजा राजसिंह

- मानसिंह के बाद राजसिंह किशनगढ़ के शासक बने।
- राजसिंह ने बाहुविलास तथा रसपाय नामक ग्रंथ लिखे तथा इनके काव्य गुरु महाकवि वृंद थे।
- किशनगढ़ चित्रकला शैली के विकास में इनका विशेष योगदान रहा।

महाराजा सावंतसिंह

- सावंतसिंह का राज्याभिषेक दिल्ली में सम्पन्न हुआ।
- ये किशनगढ़ के प्रसिद्ध शासक हुए जिन्होंने कृष्णभक्ति में राज-पाट त्याग दिया तथा वृंदावन चले गये।
- इन्होंने अपना नाम नागरीदास रख दिया। इनकी प्रेयसी का नाम 'बणी-ठणी' था।
- चित्रकार मोरध्वज निहालचंद ने 'बणी-ठणी' का चित्र बनाया जिसे जर्मन विद्वान एरिक डिक्सन ने भारत की मोनालिसा कहा जाता है।
- सावंतसिंह के काल को किशनगढ़ चित्रशैली के विकास का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- महाराजा सावंत सिंह ने मनोरथ मंजरी, रसिक रत्नावली, बिहारी चंद्रिका तथा देहदशा आदि ग्रंथों की रचना की।
- यहाँ के शासक सरदार सिंह के समय किशनगढ़ राज्य के दो हिस्से किए गए जिसमें रूपनगढ़ क्षेत्र सरदारसिंह को तथा किशनगढ़ क्षेत्र बहादुरसिंह को दिया गया।

महाराजा बिड़दसिंह

- बहादुरसिंह के निधन के बाद बिड़दसिंह किशनगढ़ के शासक बने।
- इनके समय किशनगढ़ तथा रूपनगढ़ को पुनः एकीकृत कर एक रियासत बनाया गया।

महाराजा कल्याणसिंह

- कल्याणसिंह ने 1817 ई. में अंग्रेजों के साथ सहायक संधि सम्पन्न की।
- अंग्रेजों ने किशनगढ़ से खिराज नहीं लेना स्वीकार किया।
- कल्याणसिंह ने अपने पुत्र मौखम सिंह को राजकार्य सौंपकर स्वयं मुगल बादशाह की सेवा में दिल्ली चले गये।

महाराजा पृथ्वीसिंह

- महाराजा मौखम सिंह के बाद पृथ्वीसिंह शासक बने।
- इनके समय किशनगढ़ राज्य का पहला दीवान अभयसिंह को बनाया गया।
- 1857 के संग्राम के समय किशनगढ़ के शासक पृथ्वीसिंह थे।

महाराजा शार्दूलसिंह

- महाराजा पृथ्वीसिंह के बाद उनके पुत्र शार्दूलसिंह किशनगढ़ के शासक बने।
- इन्होंने अपने पुत्र मदनसिंह के नाम पर मदनगंज मण्डी की स्थापना की।
- पृथ्वीसिंह के बाद मदनसिंह शासक बने जिन्होंने किशनगढ़ राज्य में फाँसी की सजा को समाप्त कर दिया।

महाराजा सुमेरसिंह

- सुमेरसिंह वर्ष 1939 में किशनगढ़ राज्य के शासक बने।
- सुमेरसिंह को आधुनिक साइकिल पोलो का पिता कहा जाता था।
- 25 मार्च,1948 को द्वितीय चरण में किशनगढ़ का विलय राजस्थान संघ में कर दिया गया।

मुग़ल सम्राट और उनकी राजपूत नीति

इस लेख में हम विभिन्न मुग़ल सम्राटों और उनकी राजपूत नीतियों के बारे में चर्चा करेंगे।

बाबर :-

बाबर की राजपूतों के प्रति कोई सुनियोजित नीति नहीं थी। उसे मेवाड़ के राणा साँगा और चंदेरी के मेदिनी राय के खिलाफ लड़ना पड़ा क्योंकि भारत में अपने साम्राज्य की स्थापना और सुरक्षा के लिए यह आवश्यक था। दोनों अवसरों पर, उन्होंने अपनी सफलता के बाद जिहाद की घोषणा की और राजपूतों के सिर की मीनारों को उठाया। लेकिन उन्होंने एक राजपूत राजकुमारी के साथ हुमायूँ से शादी की और राजपूतों को सेना में नियुक्त किया । इस प्रकार उन्होंने न तो राजपूतों से दोस्ती करने की कोशिश की और न ही उन्हें अपना स्थायी दुश्मन माना।

हुमायूँ :-

हुमायूँ ने राजपूतों के बारे में अपने पिता की नीति को जारी रखा। हालाँकि, उसने मेवाड़ के राजपूतों से दोस्ती करने का एक अच्छा अवसर खो दिया। उन्होंने मेवाड़ को गुजरात के बहादुर शाह के खिलाफ भी मदद नहीं की, जब मेवाड़ की रानी कर्मावती ने उनकी बहन बनने की पेशकश की थी । वह शेरशाह के खिलाफ मारवाड़ के मालदेव का समर्थन पाने में भी असफल रहा।

शेरशाह :-

शेरशाह अपनी राजसत्ता के अधीन राजपूत शासकों को लाना चाहता था। 1544 ई. में उसने मारवाड़ पर हमला किया और उसके बड़े हिस्से पर कब्जा करने में सफल रहा। रणथम्भौर पर भी उसका कब्जा हो गया, जबकि मेवाड़ और जयपुर के शासकों ने बिना लड़े ही उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

उसने अपनी मृत्यु से ठीक पहले कालिंजर पर भी कब्जा कर लिया। इस प्रकार, वह अपने उद्देश्य में सफल रहा । उनकी सफलता का एक प्राथमिक कारण यह था कि उन्होंने राजपूत शासकों के राज्य को गिराने की कोशिश नहीं की । जिन्होंने उसकी अधीनता स्वीकार की, वे अपने राज्यों के स्वामी रह गए ।

अकबर :-

- अकबर पहला मुग़ल सम्राट था, जिसने राजपूतों के प्रति एक सुनियोजित नीति अपनाई । उनकी राजपूत नीति के निर्माण में विभिन्न कारकों ने भाग लिया । अकबर एक साम्राज्यवादी था । वह अपने शासन को यथासंभव भारत के क्षेत्र में लाना चाहता था।
- इसलिए राजपूत शासकों को उसकी अधीनता में लाना आवश्यक था। अकबर राजपूतों की शिष्टता, आस्था, मर्यादा, युद्ध कौशल आदि से प्रभावित था । उसने उन्हें अपने दुश्मन के रूप में बदलने के बजाय उनसे दोस्ती करना पसंद किया।
- अकबर ने राजपूतों से दोस्ती करने की कोशिश की, लेकिन साथ ही उन्हें अपनी अधीनता में लाने की इच्छा भी की।
- हम राजपूत शासकों के बारे में निम्नलिखित तीन सिद्धांत पाते हैं:

(क) उसने राजपूतों के मजबूत किलों पर कब्जा कर लिया जैसे कि चित्तौड़, मेड़ता, रणथम्भौर, **कालिंजर** आदि के किले । इसने राजपूतों की शक्ति को कमजोर कर दिया ताकि वे प्रतिरोध की पेशकश कर सकें।

(ख) उन राजपूत शासकों ने या तो अपनी संप्रभुता स्वीकार कर ली या उनके साथ वैवाहिक संबंधों में प्रवेश किया जो स्वेच्छा से अपने राज्यों के स्वामी थे। उन्हें राज्य में उच्च पद दिए गए थे, और उनके प्रशासन में कोई हस्तक्षेप नहीं था। हालाँकि, उन्हें सम्राट को वार्षिक कर देने के लिए कहा गया था।

(ग) जिन राजपूत शासकों ने उनका विरोध किया, उन पर हमला किया गया और उनकी संप्रभुता को स्वीकार करने के लिए उनको मजबूर करने के प्रयास किए गए। मेवाड़ का मामला इसका सबसे अच्छा उदाहरण था।

- 1562 ई. में मेड़ता के किले पर कब्जा कर लिया गया था, जो जयमल के अधीन था, जो मेवाड़ के शासक के सामंती प्रमुख थे। 1568 ई. में, चित्तौड़ को मेवाड़ से छीन लिया गया और 1569 ई. में राजा सुरजन राय को रणथम्भौर के किले को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर होना पड़ा। उसी वर्ष, राजा रामचंद्र ने स्वेच्छा से कालिंजर के किले को अकबर को सौंप दिया।
- उन शासकों में जिन्होंने अकबर की संप्रभुता को स्वेच्छा से स्वीकार किया था, आमेर (जयपुर) के राजा भारमल थे। वह 1562 ई. में अकबर से मिला, उसने उसकी संप्रभुता स्वीकार कर ली और अपनी बेटी की शादी उससे कर दी। इसी राजकुमारी ने सलीम को जन्म दिया। अकबर ने राजा भारमल, उनके बेटे, भगवान दास और उनके पोते मानसिंह को उच्च मानस पुरस्कार दिया।
- चित्तौड़ के किले के पत्तन के बाद बीकानेर और जैसलमेर जैसे कुछ राजपूत राज्यों ने स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली, जबकि उनमें से कुछ ने उसके साथ वैवाहिक गठबंधन में प्रवेश किया। हल्दीघाटी की लड़ाई के बाद कुछ और राजपूत शासकों जैसे बाँसवाड़ा, बूँदी और ओरछा ने भी अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार, अधिकांश राजपूत शासकों ने बिना किसी लड़ाई के अकबर को अपना राज्य सौंप दिया, उनकी सेवा में प्रवेश किया, उनके वफादार सहयोगी बने और उनमें से कुछ उनके रिश्तेदार भी बने।

- एकमात्र राज्य जिसने अधीनता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था वह मेवाड़ था। मेवाड़ का शासक परिवार, सिसोदिया राजस्थान के राजपूत शासकों में सबसे सम्मानित परिवार था। मेवाड़ के तत्कालीन शासक उदय सिंह थे। मेवाड़ को राजनैतिक और आर्थिक दोनों दृष्टियों से जीतना आवश्यक था। राणा उदयसिंह ने मालवा के भगोड़े शासक, बाज बहादुर और विद्रोही- मिर्जा को आश्रय दिया था।
- राणा ने अकबर की संप्रभुता को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था और उन राजपूत शासकों को देखा था जिन्होंने अकबर के साथ वैवाहिक गठबंधन में प्रवेश किया था। मेवाड़

अध्याय – 9

विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन

प्रजामण्डल

- 1927 ई. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् की स्थापना के साथ ही सक्रिय राजनीति का काल आरम्भ हुआ।
- कांग्रेस का समर्थन मिल जाने के बाद इसकी शाखायें स्थापित की जाने लगी।
- 1931 ई. में रामनारायण चौधरी ने अजमेर में देशी राज्य लोक परिषद् का प्रथम प्रान्तीय अधिवेशन आयोजित किया।
- 1938 ई. में कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित कर देशी रियासतों के लोगों द्वारा चलाये जाने वाले स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक समर्थन दिया ।
- कांग्रेस के इस प्रस्ताव से देशी रियासतों में चल रहे स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक समर्थन मिला । इन राज्यों में चल रहे आंदोलन प्रत्यक्ष रूप से कांग्रेस से जुड़ गये और राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ। प्रजामण्डल की स्थापना हुई, जिसने देशी शासकों के अधीन उत्तरदायी प्रशासन की मांग की।

बीकानेर में प्रजामण्डल

- बीकानेर के महाराजा गंगासिंह प्रतिक्रियावादी व निरंकुश शासक थे।
- गंगासिंह (1880-1943) प्रथम भरतपुर के बाद शांति समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले एकमात्र भारतीय प्रतिनिधि व 1921 में स्थापित नरेन्द्र मण्डल के संस्थापकों में से एक थे।
- बीकानेर क्षेत्र के प्रारंभिक नेता कन्हैयालाल ढूँढ़ व स्वामी गोपालदास थे, इन्होंने 1907 में चूरू में सर्वहितकारिणी सभा स्थापित की।
- सर्वहितकारिणी सभा ने चूरू में लड़कियों की शिक्षा हेतु 'पुत्री पाठशाला' व अनुसूचित जातियों की शिक्षा के लिए कबीर पाठशाला स्थापित की गई। महाराजा इस रचनात्मक कार्य के प्रति भी आशंकित हो उठे और षड़यंत्र बताकर उन्हें प्रतिबंधित कर दिया।
- 26 जनवरी 1930 को स्वामी गोपालदास व चन्दनमल ब्राह्मण ने सहयोगियों के साथ चूरू के सर्वोच्च शिखर धर्मस्तुप पर तिरंगा फहराया।
- अप्रैल, 1932 ई. में जब लंदन में महाराजा गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने गये तो बीकानेर में एक दिग्दर्शन' नामक पेम्पलेट बांटे गये। जिसमें बीकानेर की वास्तविक दमनकारी नीतियों का खुलासा किया गया। लौटकर महाराजा ने सार्वजनिक सुरक्षा कानून लागू किया।
- स्वामी गोपालदास, चंदनमल बहड़, सत्यनारायण सर्राफ, खूबचन्द सर्राफ आदि को बीकानेर षड़यंत्र केस के नाम पर गिरफ्तार कर लिया गया।
- अक्टूबर, 1936 में मघाराम वैध ने कलकत्ता में बीकानेर प्रजामण्डल की स्थापना की।
- 4 अक्टूबर, 1936 ई. को प्रमुख नेता शीघ्र ही निर्वाचित कर दिये गये, जिनमें वकील मुक्ताप्रसाद, मघाराम वैध व लक्ष्मीदास शामिल थे । रघुबरदयाल ने 22 जुलाई, 1942 ई. को बीकानेर प्रजा ने परिषद् की स्थापना की, जिसका उद्देश्य महाराजा के नेतृत्व में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था।
- 1943 में गंगासिंह जी की मृत्यु के बाद शार्दुल सिंह गद्दी पर बैठे। वे भी दमन में विश्वास रखते थे।
- द्वारका प्रसाद नामक छठी कक्षा के बालक को संस्था से निकाला गया क्योंकि उसने उपस्थिति गणना के समय जयहिन्द बोल दिया था।
- 26 अक्टूबर, 1944 ई. को बीकानेर दमन विरोधी दिवस मनाया गया जो राज्य में प्रथम सार्वजनिक प्रदर्शन था। इसी बीच भारत में राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई और महाराजा ने उत्तरदायी शासन की घोषणा की।
- 30 जून, 1946 ई. में रायसिंह नगर में हो रहे प्रजा परिषद् के सम्मेलन में पुलिस ने गोलीबारी की। बदली हुई परिस्थितियों को देखते हुए सत्ता हस्तान्तरण के लक्षण जब दिखने लगे तो प्रजा परिषद् का कार्यालय पुनः स्थापित किया गया।
- 1946 ई. में ही दो समितियों, संवैधानिक समिति व मताधिकार समिति की स्थापना की गई। रिपोर्ट को लागू करने का आश्वासन तो दिया गया पर कोई ठोस कार्यवाही नहीं हो पाई व उत्तरदायी शासन की मांग अधूरी ही रही।
- 16 मार्च, 1948 ई. में जसवंत सिंह दाउदसर के नेतृत्व में मंत्रिमण्डल बना जिसे प्रजा परिषद ने अस्वीकृत कर दिया और उसके मंत्रियों ने इस्तीफा दिया।
- 30 मार्च, 1949 ई. को वृहत्तर राज्य के निर्माण के साथ रघुवर दयाल, हीरालाल शास्त्री के मंत्रिमण्डल में सम्मिलित हुए।

जैसलमेर में प्रजामण्डल

- यह क्षेत्र राजस्थान का सर्वाधिक पिछड़ा क्षेत्र था, जो विस्तारित रेगिस्तान, यातायात संचार के सीमित साधनों व राजनीतिक पृथकता के कारण शेष राजस्थान से कटा ही रहा।
- यहाँ के महारावल का दमन अत्यन्त तीव्र था। जिसके कारण 1915 ई. में सर्व हितकारी वाचनालय मीठालाल व्यास के आशीर्वाद से सागरमल गोपा व उसके साथियों द्वारा स्थापित किया गया।

मेवाड़ में प्रजामण्डल

- उदयपुर में प्रजामण्डल आंदोलन की स्थापना का श्रेय श्री माणिक्यलाल वर्मा को जाता है। 24 अप्रैल, 1938 को श्री बलवन्तसिंह मेहता की अध्यक्षता में मेवाड़ प्रजामण्डल की स्थापना की।
- प्रजामण्डल की स्थापना के समाचारों से मेवाड़ की जनता में अभूतपूर्व उत्साह का संचार हुआ, परन्तु जैसे ही मेवाड़

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्तूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)

whatsapp - https://wa.link/0yupe6 1 web.- https://shorturl.at/pwFNP

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
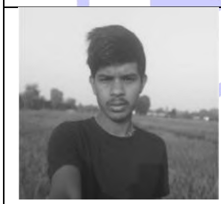	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
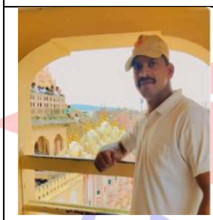	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379 HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION	Jind (Haryana)

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/0yupe6

Online order करें – https://shorturl.at/pwFNP

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE